चढ़त तुरंग चतुरंग साजि सिवराज,
चढ़त प्रताप दिन-दिन अति अंग मैं।
भूषन चढ़त मरहट्टन के चित्त चाव,
खग्ग खुलि चढ़त है अरिन के अंग मैं॥

भौंसिला के हाथ गढ़ कोट हैं चढ़त अरि,
जोट है चढ़त एक मेरु गिरि-शृङ्ग मैं।
तुरकान गन व्योम-यान हैं चढ़त बिनु
मान, है चढ़त बदरंग अवरंग मैं ॥१-४॥

शब्दार्थ—जोट=जत्थे, समूह। शृङ्ग=चोटी। व्योमयान=विमान; अर्थी। बिनु मान=मानरहित। बदरंग=बुरा रंग, फीका रंग।

अर्थ—जब शिवाजी अपनी चतुरंगिणी सेना सजाकर घोड़े पर चढ़ते हैं तब उनके अंग अंग में दिन प्रतिदिन तेज चढ़ता (बढ़ता) है, मराठों के चित्त में जोश (युद्ध का उत्साह) चढ़ता है और तलवारें खुलकर बेरोक-टोक शत्रुओं के शरीर में चढ़ती (घुसती) हैं। शिवाजी के हाथ में किले चढ़ते (आते) हैं और शत्रुओं के समूह पहाड़ों की चोटियों (शृंगों) पर चढ़ते (भाग जाते) हैं। मानरहित होकर तुर्क लोग विमान (अर्थी) में चढ़ते हैं (मर जाते हैं) और औरङ्गजेब पर बदरंगी चढ़ जाती है, उसका रङ्ग फीका पड़ जाता है।

विवरण—यहाँ सिवराज, प्रताप, चाव, खग्ग, गढ़कोट, अरि-जोट तुरकानगन और बदरङ्ग आदि उपमेयों (प्रस्तुत, वर्ण्य वस्तुओं) का 'चढ़त' एक ही धर्म कथित हुआ है।